The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-2, July 2022
www.theresearchdialogue.com

"अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन"

तारकेष्वर स्वरूप मणि
शोध छात्र,
डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,
अयोध्या (उ.प्र.)

प्रो0 शिवम श्रीवास्तव
प्राचार्य,
मदन मोहन मालवीय पी.जी. कॉलेज कालाकांकर,
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

शोध सारांश :

प्रस्तुत अध्ययन "अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन" किया गया है। अध्ययन के उद्देष्य अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना एवं अनुसूचित जनजाति के छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना। अध्ययन की परिकल्पनाएं : अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है तथा अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है। वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत सर्वेक्षण शोध विधि के अर्न्तगत बहराइच जनपद के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर घरेलू परिवेश के प्रभाव का एक अध्ययन किया गया है। न्यादर्ष के रूप में जनपद–बहराइच (उ0प्र0) के स्नातक स्तर महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति के 400 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिकीय न्यादर्ष के रूप में किया गया है। उपकरण के रूप में व्यक्तित्व मापनी का प्रयोग डॉ0 अरून कुमार सिंह एवं आशीष कुमार सिंह द्वारा निर्मित एवं पारिवारिक वातावरण मापनी को डॉ0 के0एस0 मिश्रा द्वारा निर्मित का प्रयोग किया है। **निष्कर्ष** : में पाया गया कि अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में 0.05 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध है एवं अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में असार्थक सहसम्बन्ध है।

महत्वपूर्ण शब्द : *अनुसूचित जनजाति, व्यक्तित्व, विद्यालय वातावरण*

प्रस्तावना :–

किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व चाहे कितने ही मानसिक गुणों का योग मात्र क्यों न हो, उसका व्यक्तित्व कितना ही ज्ञानी और चिन्तन शील हो, परन्तु उसके व्यवहार में गतिशीलता न होने पर उसका व्यवहार अधूरा रह जाता है। व्यक्तित्व का विकास उसकी व्यवस्थापन क्रिया तथा उसके आधार पर आधारित हैं। इस प्रकार व्यक्तित्व की आवश्यकताएं उसके व्यवहार को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए प्रेरक होती है। लक्ष्य प्राप्ति में यदि एक–दो बार प्राणी को असफलता मिलती है, तो उसके व्यक्तिगत के सम्यक विकास में बाधा पड़ती है और उसका व्यक्तित्व तब तक व्यवस्थित नहीं हो पाता, जब तक कि उसकी इच्छाओं की पूर्ति से उसे सन्तुष्ट न कर दिया जाए।

परिवार और शिक्षा एक दूसरे से सम्बन्धित है पारिवारिक सम्बन्धों का शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। (राय, 1957) ने अपने प्रयोगों के आधार पर तीन प्रकार के अभिभावक–बालक सम्बन्धों को शैक्षिक विकास के लिये उत्तरदायी बताया है। वे अभिभावक जो अपने बच्चों को यह अनुभव कराते है कि वह परिवार के महत्वपूर्ण सदस्य है। वे अपने बच्चों को निश्चित मात्रा में स्वतन्त्रता देते हैं तथा उन्हें पारिवारिक उत्तरदायित्व का अनुभव भी कराते हैं। इस प्रकार अभिभावक अपनें बच्चों को उनकी रुचि एंव योग्यतानुसार निश्चित क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते है। इस प्रकार के पारिवारिक सम्बन्ध बालक के शैक्षिक विकास को गुणात्मक रूप से प्रभावित करते है। इस पारिवारिक वातावरण में प्रायः बालक उच्च स्तर की शैक्षिक बुद्धिलब्धि प्राप्त करते है। किन्तु आज के भौतिकवादी युग में बदलती सामाजिक व्यवस्था से बदलते हुए मूल्यों से भारत जैसे परम्परागत देश में बालकों को अनेक अनुभवों से गुजरना पड़ता है। अधिकांश लोग (माता–पिता) अपने बच्चों को समझाने में असमर्थ है। माता–पिता की अभिवृत्तियों में भी परिवर्तन हो रहे है, जिसमें घर तथा विद्यालय में समायोजन करने में बच्चों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है अर्थात वह ठीक प्रकार से समायोजन नहीं कर पा रहे हैं, जिसके कारण उनमें अनेक प्रकार के लक्षण (संवेग) उत्पन्न हो जाते है जैसे कुण्ठा, शीध्र उत्तेजित हो जाना, नई परिस्थितियों में अपनी विचारधराओं को सुव्यस्थित न कर पाना, अपनी योग्यता पर विश्वास न होना आदि। इन सबका प्रभाव बच्चों की बृद्धि एंव शैक्षिक उपलब्धि पर यथेष्ट रूप से पड़ता है।

अनुसूचित जनजाति जो सदियों से सामाजिक शोषण का षिकार रही है और समानता स्वतंत्रता और न्याय की परिधि से बाहर रही है, आर्थिक समृद्धि के लिए आवष्यक है, कि समाज के मानवीय संसाधन और प्राकृतिक संसाधन का समुचित एवं न्यायोचित उपयोग हो। यदि समाज की आबादी का एक बड़ा हिस्सा (भाग) मुख्य धारा से कटा हो, तो सामाजिक उत्थान और आर्थिक विकास की योजनाओं की सफलता में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। अभी तक हुये अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति के बालक व बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण का प्रभाव स्वभाविक था क्योंकि भारतीय समाज का स्वरूप, वर्णो पर आधारित रहा है।

अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र/छात्राओं में षिक्षा के प्रति उदासीनता एवं विद्यालयी वातावरण में जो निराषाजनक साक्ष्य प्रस्तुत हो रहे हैं उनका वस्तुनिष्ठ ढंग से अध्ययन किया जाये ताकि वस्तुस्थिति का सही–सही अनुमान लगाया जा सके। अनुसूचित जनजाति के छात्र–छात्राओं में सामाजिक स्तर यदि ऊपर उठ जाये तो वे स्वंय समाज की मुख्य धारा में समाविष्ट हो सकेंगे, जब तक उनमें यह जागरूकता नहीं आती वे आरक्षण की वैषाखियों पर ही चलते रहेंगे।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व :–

बालक का व्यक्तित्व का निर्माण एवं पारिवारिक गुणों को विकसित करती है, विद्यालयी वातावरण की अनुभूति का उसे अवसर प्रदान करती है और स्वानभूति का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा अपनी नैसर्गिक क्षमताओं का पूर्णतया विकास कर प्रगति की ओर अग्रसर होता है। विद्यार्थी के सफलता के लिए आवष्यक है कि उसका विद्यालयी वातावरण समाज समुचित रूप से हो। बालक में विद्यालयी वातावरण की क्रियायें परिवार से शुरू होती हैं और प्रायः जीवन पर्यन्त चलती रहती हैं। इसका विद्यार्थी जीवन में सर्वाधिक महत्व होता है क्योंकि विद्यार्थी जीवन, जीवन का वह पडाव है जहाँ से व्यक्ति में विचारधारा जीवन शैली, रहन–सहन, व्यवहार आदि सभी कुछ प्रभावित होता है क्योंकि इस समय से उसका समाजीकरण शुरू हो जाता है। विद्यार्थी जीवन का हर पहलू उसके भविष्य के लिए कुछ न कुछ एकजुटता का कार्य करता है, विद्यार्थी का प्राथमिक से लेकर माध्यमिक एवं उच्च स्तर तक सभी में विषेष गुणों का संग्रह है, जो कभी भी अपने प्रभाव को छोड़कर जीवन को प्रभावित कर सकते है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नवत् उद्देश्य हैं–

1. अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध में शोध व शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

1. अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2. अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य –

वर्मा, अरूणा (2016) ने ''विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, मूल्यों एवं संवेगेगात्मक परिपक्वता पर पाठ्यसहगामी क्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन'' शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों की पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले छात्रों की अपेक्षा भाग लेने वाले छात्रों में व्यक्तित्व गुण सक्रियता की मात्रा अधिक है, क्योंकि पाठ्यसहगामी क्रियाएँ छात्रों की सक्रियता में सहायक होती है। ये छात्र अधिक उत्साही, प्रभुत्ववादी, विष्वासी, विषादरहित, संवेगात्मक रुप से स्थिर, उच्च व्यक्तित्व वाले पाये गये। पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले छात्रों में उक्त विषेषताएँ विपरीत पायी गयी।

Tsang] Brion और Cullough (2018) किशोरावस्था में व्यक्तित्व के लक्षणों पर अध्ययन के रूप में जल्दी वयस्कता में धार्मिकता के भविष्यवाणियों अध्ययन का नमूना 12 से 18 वर्ष की उम्र के बीच 492 किशोर थे। अध्ययन के परिणाम से पता चला कि बिग फाइव के बीच, किशोरावस्था में ईमानदारी, प्रारंभिक वयस्कता में उच्च धार्मिकता से विशिष्ट रूप से संबंधित थी। भावनात्मक स्थिरता में उच्च किशोरावस्था के लिए, वयस्कों में धार्मिक परवरिश और धार्मिकता की ताकत के बीच का संबंध कमजोर था जो किशोरावस्था के लिए कम भावनात्मक रूप से स्थिर थे।

हरिभाऊ उपाध्याय (2018) : ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया कि षिक्षा की महत्वपूर्ण सामग्री वातावरण है प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवम् विकास एक निष्चित वातावरण में होता हैं। इस वातावरण का उसके विकास में

महत्वपूर्ण योगदान होता है। उपयुक्त वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाएं अविकसित रह जाती है। निष्कर्ष में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव पडता है। लिंगभेद के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव नहीं पडता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक निष्पति के मध्य सार्थक संबंध पाया गया।

शोध विधि :

वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत सर्वेक्षण षोध विधि के अर्न्तगत बहराइच जनपद के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव का एक अध्ययन किया गया है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्ष के रूप में जनपद–बहराइच (उ0प्र0) के स्नातक स्तर महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति के 400 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिकीय न्यादर्ष के रूप में किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

इस अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने उपकरण के रूप में व्यक्तित्व मापनी का प्रयोग डॉ0 अरून कुमार सिंह एवं आशीष कुमार सिंह द्वारा निर्मित एवं विद्यालय वातावरण मापनी को डॉ0 डॉ0 के0एस0 मिश्रा द्वारा निर्मित का प्रयोग किया है।

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या :–

षोधकर्ता ने विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए उनका विष्लेषण किया है। आँकड़ों की गणना हेतु सर्वप्रथम प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर प्रत्येक चर का मध्यमान ज्ञात किया, इसके पष्चात् प्राप्त मध्यमान के आधार पर प्रमाणिक विचलन निकाला, तत्पष्चात् छात्र एवं छात्राओं के चरों का सम्बन्धात्मक अध्ययन हेतु सहसम्बन्ध गुणाँक का प्रयोग किया है। प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी व्याख्या इस प्रकार है–

तालिका सं0–01

अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

क्रम सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	सहसम्बन्ध गुणाँक	क्रान्तिक मान	सार्थकता

01	व्यक्तित्व	100	83.04	12.38	0.22947332	2.29	0.05 स्तर पर सार्थक
02	विद्यालय के वातावरण	100	195.39	44.16			

तालिका संख्या 01 से स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति के छात्रों (N=100) के व्यक्तित्व का परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 83.04 एवं मानक विचलन 12.38 ज्ञात हुआ तथा परीक्षण विद्यालय के वातावरण का मध्यमान 195.39 एवं मानक विचलन 44.16 प्राप्त हुआ। अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव के बीच सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए सहसम्बन्ध गुणॉक 0. 22947332 की गणना की। यह जानने के लिए कि अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण का प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं, के लिए क्रान्तिक मान ज्ञात किया जो 2.29 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 से अधिक एवं 2.58 से कम पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में 0.05 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध है।

अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में सार्थक सहसम्बन्ध होने के कई कारण हो सकते है–

1. अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व एवं विद्यालय के वातावरण के सांख्यिकीय मान के अवलोकन से ज्ञात होता है कि तुलनात्मक रूप से व्यक्तित्व का मध्यमान एवं मानक विचलन, विद्यालय के वातावरण का मध्यमान एवं मानक विचलन से कम पाया गया तथा सार्थकता की दृष्टिकोण से उनमें सार्थक प्रभाव पाया गया।
2. प्रायः देखा गया है कि अनुसूचित जनजाति के छात्र विद्यालय में कम संख्या में देखने को मिलते है अनुसूचित जनजाति के लोग अषिक्षित, गरीबी की रेखा से नीचे एवं सामान्य से घरों में निवास करते पाये जाते है अर्थात् वे षिक्षा से काफी वंचित रहते है फिर भी जो छात्र विद्यालय षिक्षा ग्रहण करने जाते है उन पर विद्यालय के वातावरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना संख्या–01 ''अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है''**अस्वीकृत** की जाती है।

आरेख सं0 01

अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव का आरेखीय प्रदर्षन

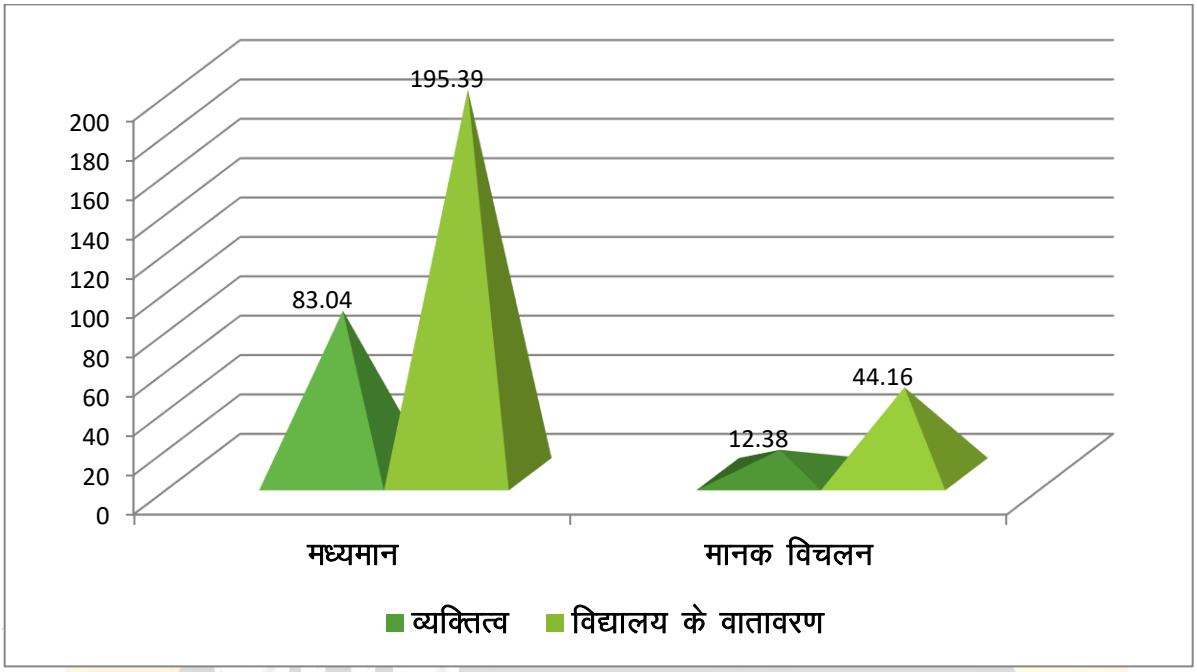

आरेख संख्या 01 से स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति के छात्रों (N=100) के व्यक्तित्व का परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 83.04 एवं मानक विचलन 12.38 ज्ञात हुआ तथा परीक्षण विद्यालय के वातावरण का मध्यमान 195.39 एवं मानक विचलन 44.16 प्राप्त हुआ।

तालिका सं0 02

अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

क्रम सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	सहसम्बन्ध गुणाँक	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	व्यक्तित्व	100	83.83	8.47	–0.01335053	0.13	असार्थक
02	विद्यालय के वातावरण	100	210.55	38.98			

तालिका संख्या 02 से स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति की छात्राओं (N=100) के व्यक्तित्व का परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 83.83 एवं मानक विचलन 8.47 ज्ञात हुआ तथा परीक्षण विद्यालय के वातावरण का मध्यमान 210.55 एवं मानक विचलन 38.98 प्राप्त हुआ। अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव के बीच सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए सहसम्बन्ध गुणॉक –0. 01335053 की गणना की। यह जानने के लिए कि अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं, के लिए क्रान्तिक मान ज्ञात किया जो 0.13 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 एवं 2.58 से कम पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में असार्थक सहसम्बन्ध है।

अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में असार्थक सहसम्बन्ध के कई कारण हो सकते है–

1. अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व एवं विद्यालय के वातावरण के सांख्यिकीय मानों की गणनोपरान्त पाया गया कि उनके व्यक्तित्व के मानों की तुलना में विद्यालय के वातावरण का मध्यमान एवं मानक विचलन अधिक पाया परन्तु सार्थकता की दृष्टि से उनमें सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।
2. अनुसूचित जनजाति के परिवारों में छात्राओं की षिक्षा का अभाव सा देखने को मिलता है। अनुसूचित जनजाति की छात्राओं में उनकी घरेलू परिस्थितियों एवं अषिक्षित परिवारों में जागरूकता का अभाव होना आदि कारण हो सकते है।

परिकल्पना संख्या–02 ''अनुसूचित जाति एवं जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है'' **स्वीकृत** की जाती है।

आरेख सं0 02

अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव का आरेखीय प्रदर्षन

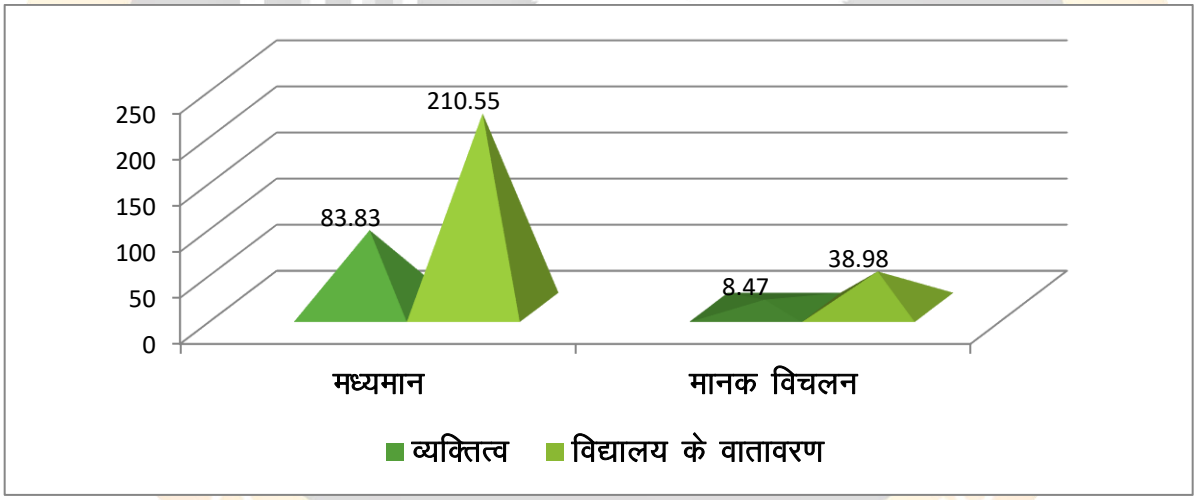

आरेख संख्या 02 से स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति की छात्राओं (N=100) के व्यक्तित्व का परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 83.83 एवं मानक विचलन 8.47 ज्ञात हुआ तथा परीक्षण विद्यालय के वातावरण का मध्यमान 210.55 एवं मानक विचलन 38.98 प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत शोधपत्र का निष्कर्ष :

1. अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में 0.05 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध है।
2. अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव में असार्थक सहसम्बन्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

- कपिल, एच.के.,(2004) ;अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन, आगरा, पृष्ठ 159
- गैरिट, हेनरी ई0,(1989); शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली
- गुप्ता डॉ0एस0पी0 एवं गुप्ता अलका : उच्चतर षिक्षा मनोविज्ञान, षारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण,2004 पृष्ठ सं0 192–195.
- राय, पारसनाथ (2003), अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायन अग्रवाल शिक्षा सम्बन्धी प्रकाशन, आगरा पृष्ठ–205
- वर्मा, अरूणा (2016)–पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, उच्च अध्ययन षिक्षा संस्थान विष्वविद्यालय, गाँधी विद्या मंदिर सरदारषहर, चूरु, राजस्थान.
- International Educational E-Journal, {Quarterly}, ISSN 2277-2456, Volume-II, Issue-I, Jan-Feb-Mar 2018 www.oiirj.org I S S N 2277 - 2456 Page 89
- Chetana Receivedon 9th Mar 2018, Revised on 18 th Mar 2018; Accepted 28 th Mar 2018

THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-2, July 2022
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-July-2022/21

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

तारकेष्वर स्वरूप मणि एवं प्रो0 शिवम श्रीवास्तव

For publication of research paper title

"अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journa and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-02, Month July, Year-2022.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com